. 98828 - 8P-80 : ABC.

HINDI AALOCHANA KA VARTMAN
Edited by : Dr. K. Shrilata Vishnu
Rs. Four Hundred Fifty only

082471

Hindi, Literary Criticism

SHREE SANKARACHARYA UNIVERSITY OF SANSKRIT LIBRARY KALADY-683574

H891.43 09
SHR/H

ISBN : 978-93-85389-40-5

अपने पतिदेव एवं
पुत्री और पुत्र को
स्नेह समेत..........

पुस्तक : हिन्दी आलोचना का वर्तमान
संपादिका : डॉ. के. श्रीलता विष्णु
प्रकाशक : **अमन प्रकाशन**
104A/80C रामबाग, कानपुर – 208012
Ph. 0512-2543480 (Off.)
0512-2543480 (Fax)
Mob. 09839218516, 08090453647
संस्करण : प्रथम, 2015

© : संपादिकाधीन

मूल्य : ₹ 450.00 मात्र
शब्द–सज्जा : रिचा ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक : अजित ऑफसेट, रामबाग, कानपुर

चिन्तन-प्रणाली में यथावश्यक समावेश करते हुए स्वतन्त्र, सशक्त व मौलिक व्यक्तित्व का निर्माण किया।

आचार्य शुक्ल के अतिरिक्त शुक्लोत्तर आलोचना-क्षेत्र के तीन प्रतिष्ठित आचार्यों-नन्ददुलारे बाजपेयी, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र के कृतित्व महत्वपूर्ण हैं।

हिन्दी आलोचना की उपलब्धि व भावी सम्भावनाएँ

आलोचना के जितने भी प्रकार हैं, प्रायः सभी के क्षेत्रों में विकास हुआ है। आलोचना की हमारी मूल धारणा (Concept) अधिकाधिक स्पष्ट होती चली है। जीवनानुभव, साहित्य-साधना एवं देश-विदेश के साहित्य के अनुशीलन से हमारा दृष्टि-विस्तार भी हुआ है।

समीक्षा-क्षेत्र में इस समय सबसे बड़ा कार्य है .... अपनी पूर्व मनीषा के उत्तमांश को समेटते हुए व नवीन जीवन-स्पृहाओं तथा कला-रुचियों का सम्मान करते हुए मानव में बहिर्जीवन व अन्तर्जीवन की पूर्णता व समृद्धि की दृष्टि से युगोचित नवीन समीक्षा-मूल्यों का निर्धारण।

एसोसियेट प्रोफेसर
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय
पन्मना प्रादेशिक केन्द्र कोल्लम

12

हिन्दी की समाजशास्त्रीय आलोचना

-डॉ. पी. एच. इब्राहिम कुट्टी

सफल साहित्यकार अपनी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के साथ-साथ समाज और साहित्य के बीच का जो गहरा संबंध है, उसका वास्तविक अन्वेषण भी करता है। उसमें सामाजिक जीवन के साथ-साथ मानवीय अनुभूतियों, भावनाओं, और संवेदनाओं का अंकन भी होता है। साहित्यिक सौन्दर्यबोध सांस्कृतिक मूल्यों के देशकाल और जीवन की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। वास्तव में सामाजिक जीवन की परिस्थितियाँ ही साहित्यकार की चेतना का निर्माण करती हैं। कहने का मतलब यह है कि समाज और साहित्य का अन्योन्याश्रित एवं गतिशील संबंध है। इसलिए हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में सामाजिक तत्वों पर ज़ोर देने वाली एक आलोचना पद्धति का उदय हुआ। इसका नाम है समाजशास्त्रीय आलोचना। समाज के बदलते मूल्यों के अनुसार आलोचना करने की यह नयी पद्धति है। जब किसी नयी रचना का महत्व प्रचलित सिद्धांतों द्वारा प्रतिपादित नहीं होता तब उसके प्रतिपादन के लिए एक नये सिद्धांत की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य से विकसित यह आलोचनात्मक पद्धति वास्तव में समाज, साहित्य और संस्कृति में स्नात है जिसका स्वरूप नाना रूपों में प्रकट हुआ है।

इस समाजशास्त्रीय समीक्षा के बीज संस्कृत काव्यशास्त्र में मिलता है। भरत मुनि ने 'स्वप्रकाशानंद' की अनुभूति के साथ-साथ साधारणीकरण के संबंध में समाजवादी मूल्यवत्ता पर बल दिया था। अनुभूतियों एवं मस्तिष्क के प्रतीकों के साथ समाजशास्त्रीय भावना भी जुड़ी है। रस निष्पत्ति के मूल में सामाजिक भूमिका ही निहित है। पंडितराज जगन्नाथ तक इसकी क्रमिक रूपरेखा मिलती है। लेकिन काव्यशास्त्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण इसका क्रमिक विकास नहीं हुआ था।

हिंदी में कबीर, सूर जैसे भक्त कवियों की रचनाओं में भी समाजशास्त्रीय चिंतन का अपरिपक्व आभास तो मिलता है। हिंदी के मूर्धन्य एवं प्रौढ़ आलोचक रामचंद्र शुक्ल जी ने लोकमंगल की भावना को आलोचना पद्धति के तहत समावेश किया था। लेकिन उनको पूर्णरूपेणा समाजबोधीय आलोचक का स्थान नहीं दे सकते। वास्तव में इस आलोचना पद्धति को अपना सही स्वरूप शुक्लोत्तर युग में प्राप्त हुआ था।

इस आलोचना पद्धति पर स्वतंत्र रूप से चिंतन-मनन बीसवीं शताब्दी में ही